(04) SARDAR PATEL UNIVERSITY

M.A. PREVIOUS [HINDI] EXTERNAL Examination, – Semester

Fri Day Date 28-03-2014

Session: Morning / ~~Evening~~ Time : 10-30 A.M. to 01-30 P.M.

Subject/Course Code : /Paper No. II

Subject/Course Title: HINDI, आधुनिक हिन्दी काव्य

Total Weightage/Marks : 100

प्रश्न-1 ऊर्मिला का वियोग-वर्णन 'साकेत' के नवम सर्ग का मुख्य विषय है' – इस कथन को सोदाहरण समझाइए। (20)

अथवा

महाकाव्य के रूप में प्रसाद कृत 'कामायनी' का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न-2 निराला के कृतित्व का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्य-कला पर प्रकाश डालिए। (20)

अथवा

उपयुक्त उदाहरण देते हुए सुमित्रानंदन पंत के प्रकृति चित्रण पर एक समीक्षात्मक लेख लिखें।

प्रश्न-3 प्रेम, प्रकृति और प्रगतिवादी संवेदना के परिप्रेक्ष्य में नागार्जुन के काव्य का मूल्यांकन कीजिए। (20)

अथवा

'अँधेरे में' काव्य का भावार्थ लिखें।

प्रश्न-4 टिप्पणी लिखें [किन्हीं चार] (20)

1. कामायनी का आमुख
2. हिन्दी कविता में हरिवंशराय बच्चन का स्थान एवं महत्त्व
3. महादेवी वर्मा का कृतित्व
4. 'अँधेरे में' काव्य का शिल्प पक्ष
5. धूमिल की काव्यगत विशेषताएँ
6. नागार्जुन की काव्यभाषा
7. अयोध्यासिंह उपाध्याय का साहित्यिक परिचय
8. छायावादी काव्य और प्रमुख कवि

प्रश्न- 5 ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए (20)

(क) मानस-मन्दिर में सती, पति की प्रतिमा थाप,
जलती-सी उस विरह में, बनी आरती आप।
आँखों में प्रिय-मूर्ति थी, भूले थे सब भोग,
हुआ योग से भी अधिक उसका विषम-वियोग।
आठ पहर चौंसठ घड़ी स्वामी का ही ध्यान,
छूट गया पीछे स्वयं उससे आत्मज्ञान।

अथवा

नीचे जल था, ऊपर हिम था, एक तरल था, एक सघन;
एक तत्व की ही प्रधानता कहो उसे जड़ या चेतन।
दूर-दूर तक विस्तृत था हिम स्तब्ध उसी के हृदय समान,
नीरवता-सी शिला, चरण से टकराता फिरता पवमान।

(ख) डाँडों के चल करतल पसार, भर-भर मुक्ताफल फेन स्फार,
बिखराती जल में तार हार!
चाँदी के साँपों-सी रलमल नाचतीं रश्मियाँ जल में चल,
रेखाओं-सी खिंच तरल सरल!
लहरों की लतिकाओं में खिल, सौ-सौ शशि सौ-सौ उडु झिलमिल
फैले फूले जल में फेनिल!

अथवा

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

=x=x=x=x=